International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(4): 289-291

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(4): 289-291
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-05-2019
Accepted: 27-06-2019

किरण कुमार
शोधछात्र पी–एच0डी0
संस्कृत–विभाग, हिमाचल प्रदेश
विश्वविद्यालय, शिमला,
हिमाचल प्रदेश, भारत

कौशल्या चौहान
शोध–निर्देशक संस्कृत–विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
किरण कुमार
शोधछात्र पी–एच0डी0
संस्कृत–विभाग, हिमाचल प्रदेश
विश्वविद्यालय, शिमला,
हिमाचल प्रदेश, भारत

चरक संहिता में सांख्य संदर्भ

किरण कुमार, कौशल्या चौहान

प्रस्तावना

चरक संहिता आयुर्वेद का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है जो कि संस्कृत भाषा में है। आयुर्वेद की संहिताओं में यह सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में चिकित्सा विज्ञान के मौलिक तत्त्वों का उत्तम विवेचन है। चरक-संहिता का सांख्य दर्शन के साथ घनिष्ठतम् सम्बन्ध है। जिस प्रकार एक दार्शनिक ग्रन्थ में प्रमाण, सृष्टि-प्रक्रिया, ईश्वर एवं मोक्ष आदि का वर्णन मिलता है उसी प्रकार इस चिकित्सा ग्रन्थ (चरक-संहिता) में भी दार्शनिक तत्त्वों की व्याख्या करने का सफल प्रयास किया गया है। ओषधियों एवं उनमें अन्तर्निहित गुणों के वर्णन में रोगोत्पत्ति में गर्भावक्रान्ति इत्यादि वर्णन में सांख्य का सत्कार्यवाद वर्णित है। इस ग्रन्थ में प्रमाण को परीक्षा के नाम से सम्बोधित किया है तथा इसमें त्रिविध प्रमाणों के अतिरिक्त युक्ति प्रमाण को स्वीकार किया है। इस ग्रन्थ में सांख्य दर्शन की तरह ही दुःख की निवृति को परम लक्ष्य माना गया है।

सृष्टि प्रक्रिया

चरक संहिता के शरीर स्थान के कतिधापुरुषीय नामक प्रथम अध्ययन में सृष्टि प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है। उसका अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट होती है कि चरक को सांख्य दर्शन की सृष्टि प्रक्रिया अभीष्ट है, परन्तु उनका यह सिद्धान्त ईश्वर कृष्ण का निरीश्वर वाद सांख्य नहीं है अपितु यह सिद्धान्त प्राचीन सांख्य है जो वैदिक दर्शन का अभिन्न है, जिसकी प्राप्ति हमें उपनिषदों में होती है। जो आगे चलकर महाभारत और श्रीमद्भागवत् जैसे ग्रन्थों में फलता-फुलता है। चरक-संहिता में प्राचीन सांख्य तथा औपनिषद दर्शन का एक अच्छा सामञ्जस्य उपलब्ध होता है।

चरक संहिता में जगत् की उत्पत्ति अव्यक्त से होती है तथा सांख्य दर्शन में भी जगत् की उत्पत्ति से अव्यक्त से मानी है।[1] लेकिन जहां सांख्य दर्शन में अव्यक्त अचेतन है वहीं चरक मुनि ने अव्यक्त शब्द से चेतन आत्मा को ग्रहण किया है। वह आत्मा, अव्यकत, क्षेत्रज्ञ, शाश्वत, विभु और अव्यय है, उससे जो दूसरा महत्त्व इत्यादि है उसे व्यक्त कहते हैं। व्यक्त उसे कहते हैं जो इन्द्रियों द्वारा माना जा सके अर्थात जिसका ग्रहण इन्द्रियों द्वारा किया जा सकता है इसके विपरीत दूसरा अव्यक्त पुरुष है उसका ज्ञान लिंग द्वारा होता है और वह अतीन्द्रिय है।[2] महाभारत में भी आत्मा को अव्यक्त कहा गया है।[3] सांख्य में जहां मूल प्रकृति को जगत का कारण माना है वहीं चरक-संहिता में उसे परमात्मा में अन्तर्भाव करके परमात्मा को ही अव्यक्त संज्ञा प्रदान की गई है, और उसी से जगत् की उत्पत्ति बताई गई है। चौबीस धातुओं वाले राशिपुरुष का जो निरूपण चरक संहिता में उपलब्ध होता है, उससे भी मूलप्रकृति और आत्मा का अभेद सिद्ध होता है - यह राशिपुरुष धातुभेद से 24 तत्त्वों वाला माना गया है वे तत्त्व इस प्रकार है - एकादश इन्द्रियां, ज्ञानेन्द्रियों के पांच अर्थ तथा आठ धातुओं से युक्त प्रकृति।[4] इनमें से मन, इन्द्रिय और अर्थ को विकार कहा गया है तथा आठ धातुओं को भूतप्रकृति कहा गया है। तन्मात्र कहे जाने वाले आकाशादि पांच सूक्ष्मभूत, बुद्धि अव्यक्त और आठवां अहंकार ये समस्त भूतों की प्रकृतियां कही गई है। विकार सोलह होते हैं - पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, एक मन और पांच इन्द्रियों के अर्थ इनके समूह को विकार करते हैं।[5] इस प्रकार अष्टधातु की प्रकृति में अव्यक्त से मूलप्रकृति और आत्मा को एकत्व से ग्रहण किया है, अन्यथा दोनों को पृथक-पृथक मानने पर सांख्य के समान यहां भी पचीस तत्त्व हो जाऐगे।

प्रमाण

चरक संहिता में प्रमाण को परीक्षा के नाम से सम्बोधित किया गया है। जिस प्रकार दर्शन शास्त्र में तत्त्वों के यथार्थ्य तथा अयाथार्थ्य का ज्ञान प्रमाणों द्वारा किया जाता है उसी प्रकार चिकित्सा बिना प्रमाण के सम्भव नहीं है।

---

[1] सांख्यकारिका, कारिका संख्या-16
[2] चरक संहिता, शरीर स्थान, 1/61-62
[3] श्रीमद्भगवद्गीता, 2/25
[4] चरक संहिता, शरीर स्थान, 1/17
[5] वही, 63-64

सांख्य शास्त्र में त्रिविध प्रमाणों का उल्लेख किया है।[6] उसी प्रकार चरक संहिता में भी सांख्य के त्रिविध प्रमाणों को स्वीकार करते हुए चरकसंहिताकार कहते हैं - रोग विरोध की जानकारी तीन प्रकार के प्रमाणों से होती है।[7]

1. आप्तोपदेश
2. प्रत्यक्ष
3. अनुमान

सांख्य में आप्तोपदेश प्रमाण को अन्तिम तथा प्रत्यक्ष प्रमाण को प्रथम प्रमाण स्वीकार किया है। चरकसंहिताकार ने आप्तोपदेश प्रमाण को प्रथम प्रमाण इसलिए स्वीकार किया है क्योंकि आप्तोपदेश प्रमाण के द्वारा ही सर्वप्रथम ज्ञान प्राप्त होता है। उसके बाद प्रत्यक्ष तथा अनुमान इन दोनों की सहायता से रोगों की परीक्षा की जाती है। यदि पहले आप्तजनों द्वारा उपदेश न दिया गया हो तो परीक्षा करने वाला प्रत्यक्ष और अनुमान द्वारा क्या समझ सकेगा? ज्ञानवान पुरुषों के लिये रोग परीक्षा दो प्रकार की है - प्रत्यक्ष तथा अनुमान। यदि उपदेश को भी जोड़ दिया जाए तो तीन प्रकार की भी कही जा सकती है।[8]

सांख्य में प्रमाणों का विवेचन इस प्रकार है - प्रत्येक इन्द्रिय का अपने-अपने विषय में अध्यवसाय ही प्रत्यक्ष प्रमाण है। तीन प्रकार का अनुमान प्रमाण - 1. पूर्ववत, 2. शोषवत, सामान्योदृष्ट। आप्त व्यक्तियों में सुना हुआ वचन आप्तवचन कहलाता है।[9] उसी प्रकार चरक संहिता में भी आप्त व्यक्ति के वचन को ही आप्तोपदेश कहा है आप्त उनको कहते हैं जिसके वचन किसी तर्क से गलत सिद्ध न हो सके, जो उचित तथा अनुचित के भेद को भली-भांति जानता हो और जो राग तथा द्वेषरहित हो।[10]

प्रत्यक्ष उसको कहते हैं जो ज्ञान स्वयं इन्द्रियों और मन से प्रापत किया जाता है।[11] अनुमान प्रमाण के विषय में कहा गया है कि युक्ति की अपेक्षा रखने वाला तर्क ही अनुमान है।[12] यह भी सांख्य की तरह तीन प्रकार का है - 1. बुद्धिमान लोग परोक्ष में धुएं से ढकी अग्नि का ज्ञान वर्तमान में (सामान्यतोद्वष्ट) अनुयान करते हैं। 2. इसी प्रकार अतीत मैथुन का ज्ञान गर्भदर्शन से निपश्चय (शेषवत्) 3. फल का अनुमान बीज से किया जाता है (पुर्ववत्)।[13]

पुरुष

सांख्य में पुरुष को अगुण, विवेकी, अविषय, असामान्य, चेतन और अत्रसवधर्मी कहा है।[14] पुरुष की सिद्धि में निम्न कारिका में पाँच हेतु प्रस्तुत किए है -

> संघातपरार्थत्वात्, त्रिगुणदिविपर्यभादधिष्ठानात्।
> पुरुषोऽस्ति, भौकतृभावाहकैवल्यार्थ प्रवृतेश्च।।[15]

सांख्य की तरह चरक संहिता में भी आत्मा को पुरुष नाम से सम्बोधित किया गया है। चरक संहिताकार ने भी पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं।[16]

1. एक धातुज
2. षड् धातुज
3. चतुर्विंशतितत्त्वात्मक पुरुष

यहां केवल चेतना धातु या आत्मा को एक धातुज पुरुष की संज्ञा दी गई है। यह चिकित्सा का विषय नहीं है तथा कर्मभोग भी इसके अधीन नहीं माने जाते हैं। पंचमहाभूत तथा आत्मा के संयोग को षड्धातुज कहा है। पंचमहाभूत का चेतना धातु के साथ संयोग होने पर ही पुरुष चिकित्सा के योग्य होता है। सांख्य में जिस प्रकार 25 तत्व स्वीकार किये है वहीं चरक संहिता में धातुभेद से 24 तत्त्वों के समूह को पुरुष माना गया है।

चरक संहिता में भी सांख्य की तरह आत्मा को क्रियाशून्य, कूटस्थ, एवं अविकारी तत्त्व माना जाता है। आत्मा निष्क्रिय है तथा वह स्वतन्त्र भी है।[17] धर्म-अधर्म के बिना पुरुष एक कटे हुए पंख वाले पक्षी की तरह है जो चेतन होते हुए भी उड़ नहीं सकता है।[18] आत्म साक्षी है क्योंकि मैं सुखी हूँ, मैं दुःखी हूँ, इसका ज्ञान आत्मा ही कराती है। अतः चरक ने भी सांख्य की तरह पुरुष को साक्षी माना है।[19]

चतुर्विंशति तत्त्व

तत्त्वों की संख्या के विषय में भिन्न-भिन्न दर्शनों के भिन्न-भिन्न मत है जहां वैशेषिक दर्शन सात पदार्थ मानता है वहीं न्याय षोड्श पदार्थ स्वीकार करता है। सांख्य जहां 25 तत्त्वों को वहीं योग ईश्वर को जोड़कर 26 तत्त्व स्वीकार करता है।

अगर केवल तत्त्वों की गणना शब्दों के अनुसार ज्यों की त्यों की जाए तो यह तत्त्व 24 है। परन्तु उन तत्त्वों का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला जाए तो यह तत्त्व सांख्य के समान पच्चीस तत्त्व ही प्राप्त होते हैं। सांख्य में अव्यक्त शब्द से केवल मूल-प्रकृति का ही ग्रहण किया है परन्तु चरक संहिता में अव्यक्त से पुरुष तथा प्रकृति दोनों को लिया जाता है। चरक संहिता में तत्त्वों की उत्पत्ति का क्रम इस प्रकार है - अव्यक्त से बुद्धि की उत्पत्ति होती है, बुद्धि के अहंकार, अहंकार से सूक्ष्ममहाभूत तथा उसे पांचतन्मात्राएं और एकादश इन्द्रिां उत्पन्न होती है।[20] सांख्य में अहंकार से शब्दादि पांच तन्मात्राएं उत्पन्न होती है। तथा उन तन्मात्रा से पञ्च महाभूत।[21] चरक संहिता में इन चौबीस तत्त्वों को दो वर्गों में विभक्त किया है - 1. प्रकृति वर्ण, 2. विकृति वर्ण। प्रकृति में आठ तत्त्व - आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, बुद्धि, अव्यक्त तथा अहंकार ये आठ प्रकृतियां है। विकृति वर्ण में सोलह तत्त्व-पांच ज्ञानेन्द्रियां तथा पांच कर्मेन्द्रियं, मन तथा शब्दादि पांच विषय ये सोलह विकृतियां है।[22]

दुःख निवृति

संसार दुःखों का घर है तथा इस दुःख की निवृत्ति कराना ही सभी दर्शनों का परम लक्ष्य रहा है। अतः एक दार्शनिक ग्रन्थ की तरह ही आयुर्वेद के इस ग्रन्थ का क्ष्य भी प्राणियों के दुःख का नाश कराना है। जिस प्रकार सांख्य में त्रिविध दुःख कहे हैं[23], उसी प्रकार चरक ने इनमें से आध्यात्मिक दुःखों का अधिकतर वर्णन चरक संहिता में किया है। चरक ने आध्यात्मिक दुःख के चार प्रकार कहे हैं - 1. आगन्तुज, 2. वातज, 3. पितज, 4. कफज। इन चार प्रकार के दुःख अधिष्ठान के भेद से दो ही प्रकार के हैं - 1. शारीरिक, 2. मानसिक।[24]

चरक ने उन दुःखों का मूल उपधा को स्वीकार किया है। सभी प्रकार की उपधओं को छोड़ना ही सभी दुःखों का विनाशक है। जैसे रेशम का कीड़ा अपने सभी विनाशक तन्तुओं को स्वयं ही उत्पन्न करता है। उसी प्रकार ज्ञान रहित मानव पांच ज्ञानेन्द्रियों के विषय के प्रति अपने में तृष्णा को उत्पन्न कर लेता है, अतएव वह हमेशा रोगी बना रहता है। इसके विपरीत जो मनुष्य अग्नि के समान इन इन्द्रियों के विषय को भली-भांति जानकर उनसे निवृत हो जाता है। उसके उपरान्त किसी कार्य के आरम्भ न होने से तथा शरीर का संयोग न होने से आत्मा उस दुःख को प्राप्त नहीं होती है।[25]

---

[6] सांख्यकारिका, कारिका संख्या-4
[7] चरक संहिता, विमान स्थान, 4/1
[8] वही, 5
[9] सांख्यकारिका, कारिका संख्या-5
[10] चरक संहिता, विमान स्थान, 4/2
[11] वही, 4/3
[12] वही, 4
[13] वही, सूत्रस्थान, 11/21-22
[14] सांख्यकारिका, कारिकासंख्या-11
[15] वही, 17
[16] चरक संहिता, शरीर स्थान, 1/16-17
[17] चरक संहिता, शरीर स्थान, 1/4
[18] वही, 75-77
[19] वही, 83
[20] वही, 66
[21] सांख्यकारिका, कारिका संख्या-22
[22] चरक संहिता, शरीर स्थान, 1/63-64
[23] सांख्यकारिका, कारिका संख्या-1
[24] चरक संहिता, सूत्र-स्थान, 20/3
[25] वही, शरीर स्थान, 1/95-97

मोक्ष

चरक संहिताकार दुःख निवृत्ति की अवस्था को ही मोक्ष कहते हैं। सभी दुःख निवृत्ति का मोक्ष नहीं कहा जा सकता। जिस दुःख निवृत्ति के बाद कालत्रय में अर्थात् हमेशा के लिए दुःखों का पुनरागमन नहीं होता, केवल वही दुःख निवृत्ति मोक्ष नाम से कही जाती है। विपाय, विरजस, शान्त, पर, अक्षर, अव्यय, अमृत, ब्रह्म, निर्वाण और शान्ति इन पर्यायों द्वारा मोक्ष का परिचय चरक संहिता में कहा गया है।[26]

जब मन से रज ओर तथा सर्थाा दूर हो जोय तथा बलवान कर्मों का सर्वथा क्षय हो जाये तब प्राणी कर्म के संयोग से मुक्त हो जाता है और पुनः संसार में नहीं आता। इसी को मोक्ष कहते हैं।[27] इसके उपरान्त शिष्यों द्वारा प्रश्न किया गया कि मोक्ष के उपरान्त मुक्त आत्मा की क्या दशा होती है इसके उतर में आत्रेय कहते हैं कि शरीर मन एवं इन्द्रिय इन सबका अभाव हो जाने पर आत्मा का कोई लिंग शेष नहीं रहता। तब आत्मा अलिंग कहलाती है। यही अवस्था मुक्तावस्था कहलाती है।[28] चरक ने मोक्ष को प्राप्त करने के लिए ज्ञान मार्ग तथा कर्म मार्ग दोनों ही उपायों को मोक्ष प्राप्ति हेतु उपयोगी माना है। सांख्य दर्शन की तरह चरक भी मोक्ष प्राप्ति का साक्षात साधन तत्त्वज्ञान या तत्त्वस्मृति है। इस संहिता में कहा हे कि जिस व्यक्ति ने योग से तत्त्वस्मृति का बल प्राप्त कर लिया वह पुरुष मरने के बाद पुनः इस संसार में नहीं आता।[29]

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. चरक संहिता (प्रथम-भाग) लेखक-चरक, व्याख्याकार : डॉ$_0$ ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, प्रकाशक : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वारणसी, 37/114, गोपाल मन्दिरलेन, पोस्ट बॉक्स नं0 1129, संस्करण : 2017
2. चरक संहिता (उतरार्द्ध), व्याख्याकार : डॉ$_0$ ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, प्रकाशक : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन बाराणसी 37/114, गोपाल मन्दिर लेन, संस्करण : 2015
3. भावप्रकाश, लेखक : भावमिश्र, अनुवादक : लाला शालिग्राम शास्त्री, प्रकाशक : खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई : संस्करण : फरवरी 2011
4. सर्वदर्शन संग्रह, लेखक : माधवाचार्य, भाष्यकार : डॉ$_0$ उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी-221001, संस्करण : 2012
5. सांख्यदर्शनम्, लेखक : आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक : विजय कुमार, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली-11006, संस्करण : 2014
6. सांख्यकारिका, लेखक : ईश्वरकृष्ण, सम्पादक : आचार्य जगन्नाथ शास्त्री, प्रकाशक : मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, संस्करण : पंचम् 1982

[26] वही, 5/23

[27] चरक संहिता, शरीर स्थान, 1/142

[28] वही, 5/22

[29] वही, 1/150-151